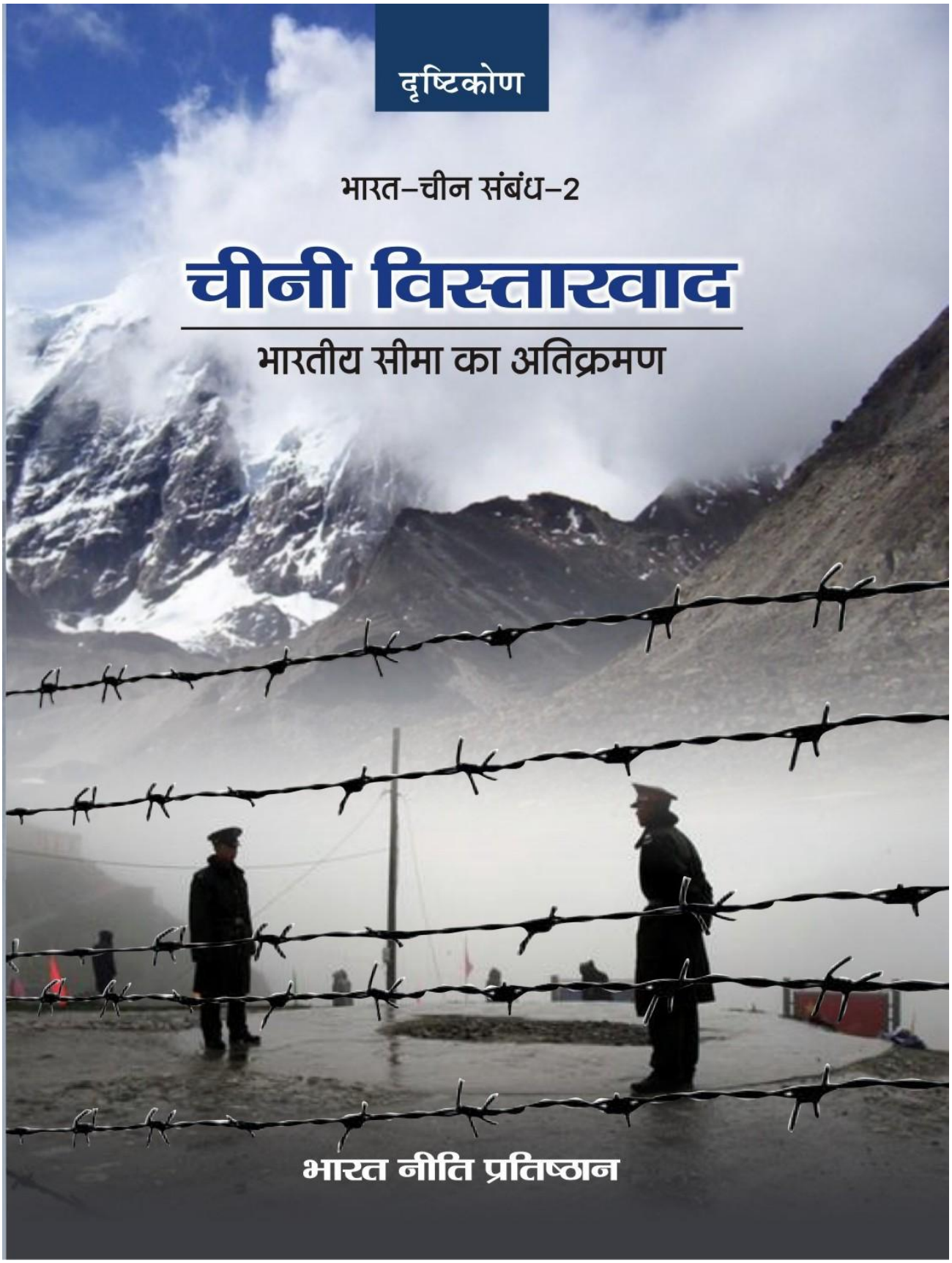
दृष्टिकोण
भारत–चीन संबंध–2
चीनी विस्तारवाद
भारतीय सीमा का अतिक्रमण
भारत नीति प्रतिष्ठान

दृष्टिकोण

भारत चीन संबंध–2

चीनी विस्तारवाद

भारतीय सीमा का अतिक्रमण

लेखक

डॉ. सतीश कुमार

इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो–प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के द्वारा नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक

भारत नीति प्रतिष्ठान
डी–51, हौज खास
नयी दिल्ली–110016 (भारत)
दूरभाष : 011–26524018
फैक्स : 011–4608935
ई–मेल : indiapolicy@gmail.com

संस्करण : प्रथम, 2011

© भारत नीति प्रतिष्ठान

मूल्य : 50 रुपये मात्र

मुद्रक
विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

अनुक्रम

प्राक्कथन

भूमिका

अध्याय – एक

1. चीन से खतरे के बहुआयामी संकेत

अध्याय – दो

2. चीन से खतरा कैसे पैदा हुआ?

अध्याय – तीन

3. चीन का सैनिक सिद्धांत और झांसावादी रणनीति

अध्याय – चार

4. चीन–पाक गठजोड़ और भारतीय सुरक्षा

अध्याय – पांच

5. अरूणाचल को हड़पने की चाल

अध्याय – छह

6. नेपाल में चीन की विस्तारवादी नीति और भारत की असुरक्षा

7. भारत चीन संबंध महत्वपूर्ण घटनाएँ

प्राक्कथन

सामरिक विशेषज्ञों व टिप्पणीकारों की दृष्टि एशिया की दोनों महाशक्तियों यानि भारत और चीन पर कई कारणों से टिकी हुई है। यह भी एक संयोग है कि आगामी वर्ष यानि 2012 भारत पर 1962 में चीनी आक्रमण की 50वीं वर्षगांठ होगा। उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को भले ही आज पांच दशक बीतने को हैं, एशियाई महाद्वीप के परिदृश्य पर चीन और भारत जैसे प्राचीन और विशाल देशों का आधुनिक पुनरोदय कई प्रकार की पेचीदगियां उत्पन्न कर रहा है, जो एशिया ही नहीं, समूची विश्व राजनीति को भी प्रभावित करेंगी।

उपर्युक्त परिदृश्य पर एक सरसरी दृष्टि भी डालें तो यह स्पष्ट होने लगता है कि 1962 के चीनी हमले और उस युद्ध में भारत को लगे आघात से भारत की विभिन्न सरकारों और नीतिकारों ने कोई सबक नहीं सीखा। इस लम्बी अवधि के दौरान शीतयुद्ध, विश्व में साम्यवादी खेमे के साथ सोवियत संघ जैसी महाशक्ति का पतन और विखंडन, और नई बाजार–प्रणीत वैश्वीकरण जैसी उथल–पुथल भरी घटनाक्रमों के साथ विश्व मंच पर एक शक्ति के रूप में चीन का उभरना भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रम है, जिसका अध्ययन विभिन्न स्तरों पर एवं दृष्टिकोणों से किया जा रहा है। परंतु क्या भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा व अखंडता के मद्देनजर निकट भविष्य में चीन से उत्पन्न हो सकने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए देश के शासक और नीतिकार पूरी तरह तैयार हैं? वर्तमान परिदृश्य पर नजर डालें तो हो सकता है कि एक नकारात्मक घटाटोप सामने आएं, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि किसी भी प्रकार की सार्थक नीति के लिए एक संतुलित और सर्वांगीण दृष्टिकोण अपेक्षित है। पिछले कुछ वर्षों से चीन–भारत संबंधों में सीमा विवाद का प्रश्न एक बार फिर केन्द्र में आ गया है। इसका कारण यह नहीं है कि भारत ने चीन द्वारा पचास–साठ के दशकों में हड़पी भूमि पर अपने दावे को आक्रामक रूप दिया है, बल्कि चीन भारत के अन्य भागों पर भी अपना दावा करने लगा है। अरूणाचल प्रदेश को चीन अपनी–भूभाग के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

चीन से उत्पन्न होनेवाली चुनौती को लेकर भारत नीति प्रतिष्ठान ने इस विषय के विशेषज्ञों, अध्ययनकर्ताओं और वरिष्ठ पत्रकारों के सम्मिलित प्रयासों से इस संदर्भ में चार शोध पुस्तिकाओं की एक श्रृंखला तैयार की है। डॉ. सतीश कुमार द्वारा लिखित यह शोध पुस्तिका 'चीनी विस्तारवाद' (भारतीय सीमा का अतिक्रमण) इस श्रृंखला की दूसरी कड़ी है। इसमें भारत नीति प्रतिष्ठान के प्रथम पुस्तिका अध्ययन सामग्री एवं शोधकर्मियों ने अमूल्य योगदान दिया है।

प्रस्तुत पुस्तिका में डॉ. सतीश कुमार ने भारत–चीन विवाद के अनेक महत्वपूर्ण आयामों पर गहन एवं अध्ययनपरक दृष्टि डालते हुए वर्तमान संदर्भ में इस विवाद की एक वस्तुनिष्ठ एवं अध्ययनपरक प्रस्तुति की है। सतीष कुमार ने भारत और चीन के बीच उत्पन्न हो रही विषमताओं और उसके भारत सहित एशिया के लिए चीनी विस्तारवाद के संभावित दुष्परिणामों का जो यथार्थपरक चित्र रहा है, वह निःसंदेह शासकों और नीतिकारों के साथ–साथ शोध व अध्ययनकर्ताओं और प्रबुद्ध पाठकों के लिए मार्गदर्शक होगा।

इस प्रोजेक्ट के समन्वय में नवनीत तथा जगन्निवास अय्यर एवं टंकन कार्य में सहयोग के लिए शिव कुमार सिंह का योगदान प्रशंसनीय है।

—डॉ. बजरंगलाल गुप्त
अध्यक्ष
भारत नीति प्रतिष्ठान

भूमिका

चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की 15–17 दिसंबर, 2010 भारत यात्रा ने सीमा विवाद को और पेचीदा बना दिया। तकरीबन 3,500 कि.मी. की सीमा रेखा को लेकर कोई सार्थक बातचीत दोनों देशों के बीच में नहीं हो पाई। बल्कि चीन के सरकारी पत्र द्वारा यह कहा गया कि भारत और चीन की सीमा महज 2,000 किमी. तक सिमटी हुई है। *पीपुल्स डेली* समाचार पत्र ने भारतीय प्रमाण को गलत और बेबुनियाद माना है।[1] यह सब कुछ चीन के सरकारी पत्र में उसी समय प्रकाशित किया गया जब चीन के प्रधानमंत्री भारत के दौरे पर थे। चीन में भारतीय राजदूत श्री एस. जयशंकर ने चीन की दलील को एक खतरे का संकेत माना है।[2] सितंबर 2010 में भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी यह कहा था कि चीन जानबूझकर भारत के उन संवेदनशील क्षेत्रों में अतिक्रमण कर रहा जो भारतीय सुरक्षा के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।[3]

चीन की सोच में सीमा विवाद को लेकर बुनियादी बदलाव देखा जा सकता है। चीन ने बड़ी ही कुटिलता के साथ सीमा विवाद को अपने सामरिक विस्तार के मोहरे की तरह प्रयोग किया है। सीमा विवाद का हल ढूंढने का प्रयास दोनो देशों के बीच 1981 से ही किया जा रहा है। अभी तक सीमा विवाद को लेकर 14 सत्र की वार्ता दोनो देशों के बीच हो चुकी है। लेकिन बात सुलझने के बजाय और उलझती ही जा रही है। क्योंकि चीन जान बूझकर ऐसा कर रहा है। चीन जम्मू–कष्मीर को विवादास्पद क्षेत्र कहता है, तो उसका कारण सिर्फ पाकिस्तान को खुश करना नहीं है। बल्कि चीन इस क्षेत्र में अपनी पैठ बनाकर भारतीय सुरक्षा को हर तरह से कमजोर करने की कोशिश में है।[4] उल्लेखनीय है कि अक्साईचीन प्रदेश में सड़क निर्माण के कारण ही चीन ने सीमा विवाद को 1960–62 के बीच विस्फोटक बनाया था। इसी मार्ग से लौकनोर में परमाणविक अस्त्रों के परीक्षण स्थल तक उसकी पहुंच बनती है। दरअसल यही से पाक–अधिकृत कष्मीर के रास्ते चीन ग्वादर के बंदरगाह तक पहुंच सकता है। चीन की गिद्ध दृष्टि हिंद महासागर पर भी है। चीन बड़े पैमाने पर नौसैनिक शक्ति का विस्तार दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में कर रहा है।[5]

चीन भारत की सीमाओं के इर्द–गिर्द सामरिक जाल बुनने का काम पिछले कई वर्षों से कर रहा है। हिमालय की तराई में बसे हुए देशों के बीच सड़क और रेल संपर्कों का निर्माण चीन की चाल है। चीन के काषगर और पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद को जोड़ने वाले काराकोरम हाइवे की लंबाई 1300 किमी. है। इस राजमार्ग के 'फ्रेंडशिप हाईवे' का नाम दिया गया है। पिछले कुछ वर्षों से चीन द्वारा इस सड़क की चौड़ाई 10 मी. से 30 मी. तक की जा चुकी है। चीन ऐसा इसलिए कर रहा है कि युद्ध या संघर्ष की स्थिति में उसकी सेना और सैन्य सामान को एक जगह से दूसरे जगह द्रुत गति से पहुंचाया जा सके।

पिछले कुछ वर्षों में चीन के सामरिक विस्तार को समग्र रूप में देखें तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत ही उसका प्रमुख लक्ष्य है। दरअसल मौजूदा हालात 1960–62 से भी बदतर है।[6] सितम्बर 1962 को चीन की सेना ने 'यागलारिज' पर आक्रमण कर दिया था और भारत की सेना पीछे हट गई थी। पुनः पूर्वी सीमा के भीतर तक पी.एल.ए. की सेना जा घुसी थी। पष्चिमी सीमा पर चीन ने तकरीबन 13 भारतीय सैनिक ठिकानो पर कब्जा कर लिया था। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण 24 घंटे के भीतर चीन की सेना उन जगहों को छोड़कर अपने बैरक में वापस लौट गई थी[7]। मौजूदा हालात और चीन की नीयत

दोनों ही समीकरण 1962 से भी खतरनाक है। इस बार चीन ने भारत की संप्रभुता को चुनौती दी है। पूर्वी और पष्चिमी सीमा पर नए सिरे से विवाद को जन्म देकर चीन ने भारत की अखंडता पर प्रष्न उठाया है। कष्मीर का भौगोलिक ढांचा तीन भागों में बंटा हुआ है। 45 हिस्सा भारत के पास है। 35 प्रतिशत चीन के पास शेष 20 प्रतिशत पाकिस्तान ने हड़प लिया है।[8] चीन सुनियोजित ढंग से पाक–अधिकृत कष्मीर में अपना सैनिक विस्तार कर भारत की सुरक्षा को और कमजोर करना चाहता है।

चीन भारत को अपने गंभीर प्रतिद्वंदी के रूप में देखता है। इसलिए वह हर कीमत पर भारत को कमजोर करने की कोशिश में है और इसके लिए हर प्रकार की जोर आजमाईश कर रहा है। चीन के सरकारी पत्र *'पीपुल्स डेली'* में यह कहा गया कि "भारत किसी भी तरह चीन का मुकाबला नहीं कर सकता"[9]। एक दूसरे पत्र में चाइनीज विश्लेषक दाई वींग ने यह माना कि "संभवतः भारत और चीन के बीच भले ही युद्ध न हो लेकिन शीत युद्ध की गर्मी युद्ध का माहौल तैयार कर सकती है। प्रो. अमिताभ मट्टू के अनुसार चीन हर तरह से इस बात की ताकीद कर रहा है कि एशिया में एक मात्र शक्ति है वह है चीन की शक्ति।[10] इसलिए चीन अपनी सामरिक शक्तियों का न केवल प्रसार कर रहा है बल्कि उन शक्तियों का पाइलट परीक्षण भी कर रहा है। मोहन मलिक, सुरक्षा विशेषज्ञ के अनुसार चीन भारत को एक शक्ति के रूप में उभरने नहीं देना चाहता। चीन ने 2005 के पहले ऐसा कभी नहीं कहा कि अरूणाचल प्रदेश तिब्बत का दक्षिणी हिस्सा है या 1962 का "अधूरा काम"। चीन की नीति में तीखापन 2005 में आया। मलिक यह मानते हैं कि चीन यह सब कुछ जानबूझकर कर रहा है।[11] उल्लेखनीय है कि चीन के भीतर पी.एल.ए. अर्थात चीन की सेना महत्वपूर्ण शक्ति केंद्र बन चुकी है। रिसर्च और एनालिसिस वींग के पूर्व प्रमुख बी रमन का मानना है कि पी.एल.ए. का प्रशिक्षण और प्रकृति पूरी तरह से भारत–विरोधी है।[12]

दूसरी तरफ भारत–चीन नीतियों के नीति निर्धारक आज भी भ्रम में जी रहे हैं। 1962 में मिली ष्क्षिति के बावजूद यह माना जा रहा है कि भारत 1962 जैसी स्थिति पैदा नहीं होने देगा। लेकिन जिस तरह की चूक की वजह से भारत 1962 के युद्ध में मात खाया था संभवतः उसी तरह की भूल आज भी की जा रही है। पेंटागन की रिपोर्ट 2010 में साफ तौर पर माना गया है कि चीन की युद्ध नीति और सैनिक सिद्धांत पूरी तरह से रहस्यपूर्ण है। पूरी दुनिया को विशेषकर भारत को नहीं मालूम की चीन का अगला कदम क्या होगा।

दरअसल 1962 के युद्ध के पहले भारत इस भ्रम में था कि चीन कभी भी भारत से युद्ध नहीं करेगा। इसी कूपमण्डूकता के कारण भारत के पास न तो कोई सार्थक चीन नीति थी और न ही दक्षिण एशियाई नीति। आज जिस तरीके से चीन 1962 के युद्ध के पांच दशकों बाद पूरे दक्षिण एशिया में फैलकर भारत को घेरने की तैयारी कर ली है, वह चीन के विस्तारवाद और भारत की दृष्टिहीनता की वजह से ही हो पाया है। ब्रिटिश साम्राज्य की सोच दक्षिण एशिया और हिन्द महासागर के संदर्भ में एक समग्र रूप में थी। ब्रिटिश शासन अफगानिस्तान से लेकर तिब्बत को बफर लाईन मानती थी, जिसकी लकीरें उत्तरी बर्मा तक फैली हुई थी। समुद्री मुहानों पर यह लाईन लाल सागर से मल्लका स्ट्रेट तक फैला हुआ था।[13] लेखक जान गार्वर ने यह माना है कि भारत को विरासत में एक ऐसा सामरिक ढांचा मिला था, जिसे भारत के राजनीतिबाजों के आदर्शवाद की मोह में तोड़ दिया[14]। कई रक्षा विशेषज्ञ यह मानते हैं कि अगर नेहरू में

सामरिक सूझ–बूझ होती तो भारत न केवल 1962 का युद्ध जीत जाता बल्कि 1962 के बाद बनी भारत के गले में सुरक्षा की हड्डी यानि कष्मीर समस्या भी नहीं होता। तिब्बत एक स्वतंत्र देश होता। भारत की सुरक्षा उत्तरी सीमा से पूरी तरह चाक–चौबंद होती। ब्रह्मपुत्र की धाराओं के साथ खिलवाड़ नहीं होता। तिब्बत आण्विक प्रक्षेपास्त्रों का अड्डा नहीं बनता। भारत में नक्सलवाद की लपटें नहीं उठती जो आज हमारे देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए अहम प्रष्न बन गया है।

पेंटागान और अन्य देशों की सुरक्षा रिपोर्टें इस बात की ताकीद कर रही हैं कि चीन विदेशों में अपना सैनिक अड्डा बनाने की तैयारी में जुटा हुआ है। इसमें महत्वपूर्ण देश है बांग्लादेश, कम्बोडिया, म्यानमार, पाकिस्तान और थाईलैंड। भारत के लिए चीन के ये सैनिक अड्डे कई मुष्किलें खड़ी करेंगे। चीन का सान्या नौसैनिक अड्डा एक भूमिगत नौसैनिक अड्डा है जो आण्विक पनडुब्बियों से लैस है। इसकी दूरी मल्लका स्ट्रेट से महज 1,200 नौटिक्ल मील है। पाकिस्तान के ग्वादार नौसैनिक अड्डा बन जाने से चीन भारतीय व्यापार को अरबियान सागर में जाने से रोक सकता है।[15] कराची बंदरगाह के जरिए पाकिस्तान भारत पर अंकुश रखने की कोशिश कर सकता है।

अध्याय – एक

चीन से खतरे के बहुआयामी संकेत

- भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की 2003 चीन यात्रा के दौरान इस बात पर आम सहमति बनी थी कि कष्मीर का मुद्दा भारत की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है और उस मुद्दे पर चीन कोई भी भारत–विरोधी टिप्पणी कर दोनों देषों के बीच बन रहे संबंध में अनावष्यक अवरोध पैदा नहीं करेगा। लेकिन पिछले दिनों पाक–अधिकृत कष्मीर में 7,000 से 11,000 चीनी सेना की उपस्थिति ने पूर्व–निर्धारित शर्तों को तोड़ दिया है और इससे खतरे की नई आषंका पैदा हो गई है।[16]
- जम्मू कष्मीर के लोगों को एक अलग प्रकार से वीजा देने की शुरूआत इस बात के साफ संकेत हैं कि चीन कष्मीर को पुनः विषैले नजरिए से आंकने लगा है। इस बात का विरोध भारत की सरकार द्वारा भी किया गया। चीन ने ले. जनरल बी.एस जमवाल को चीन की यात्रा के लिए वीजा देने तक से इंकार कर दिया।[17]
- 2007 में चीन की सरकार ने 100 से अधिक भारतीय प्रषासनिक सेवा (आइएसए) अधिकारियों को वीजा देने से इंकार कर दिया। कारण यह बताया गया कि उस टीम में अरूणाचल कैडर का भी एक अधिकारी शामिल था। इसी तर्क के आधार पर अरूणाचल प्रदेष के मुख्यमंत्री गगोई अपांग को भी चीन की सरकार ने वीजा देने से इंकार कर दिया था। चीन की दलील है कि अरूणाचल प्रदेष चीन का दक्षिणी हिस्सा है।[18] अपने ही देष में आने के लिए वीजा की आवष्यकता नहीं होती है। चीन अरूणाचल प्रदेष पर भारत का "अवैध कब्जा" मानता है।
- चीन ने दलाईलामा को लेकर काफी बवाल मचाना शुरू कर दिया है। 2010 में दलाई लामा की तवांग यात्रा को अनावष्यक तूल दी गई। सांस्कृतिक आयोजन में भी दलाई लामा की गतिविधियों को लेकर चीन द्वारा भौंकने की परंपरा शुरू कर दी गई। दरअसल यह बदला हुआ मिजाज विष्वासघाती समीकरण का हिस्सा है।
- चीन भारत की सुरक्षा संबंधित सूचनाओं को इकट्ठा कर रहा है। प्रधानमंत्री कार्यालय और सेना प्रमुख कार्यालय से संबंधित तथ्यों को साईबर तकनीक द्वारा हैक करने की कोषिष कर रहा है। इस बात की पुष्टि भारत के पूर्व सुरक्षा सलाहकार श्री एम.के. नारायणन द्वारा की जा चुकी है।[19]
- चीन 60 के दषक से ही भारतीय उपमहाद्वीप में अपना पैर पसार रहा है। उसका निषाना भारत है। 2007 से चीन की मुहिम तेज हो गई है। श्रीलंका, म्यांमार, नेपाल, बांग्लादेष, भूटान और पाकिस्तान के साथ मिलकर चीन भारत को वैष्विक शक्ति बनने से रोकना चाहता है।[20]
- 2010 में अमेरिकी कांग्रेस के द्वारा पारित की गई सुरक्षा रिपोर्ट में भी चीन के आक्रामक रूख की बात कही गई है और अमेरिका द्वारा इस परिवर्तित रूख पर चिंता भी जाहिर की गई है। जापान, दक्षिणी कोरिया और अन्य दक्षिणी पूर्व देषों के द्वारा भी चीन की कूटनीति में अड़ियलपन और विस्तारवादी

नीतियों के कारण विष्व शांति ओर पड़ोसी देषों के लिए सुरक्षा का नया खतरा उभरकर सामने आ रहा है।

- वर्ष 2009 में एशियन विकास बैंक द्वारा अरूणाचल प्रदेष हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट की राषि को चीन ने अपने प्रभाव के जरिए रोकने की कोषिष की। यह पहला मौका है जिसमें किसी अंतर्राष्ट्रीय संगठन को भारत को विरूद्ध उकसाने का काम किया गया।
- चीन द्वारा द्रुतगति से तिब्बत और नेपाल के विभिन्न शहरों को रेल लाईन से जोड़ने की कोषिष की जा रही है। ल्हासा से झिज्जे और काठमांडू के बीच रेल लाईन परियोजना का काम शुरू कर दिया गया है। झिज्जे और नयालाम के बीच रेल लाईन बन जाने के बाद काठमांडू की दूरी महज 12 कि.मी. तक सिमट जाएगी। अर्थात् चीन की रेल भारतीय सीमा तक पहुंच जाएगी।[21]
- चीन मनोवैज्ञानिक रूप से भारत को इस तरह से प्रभावित करना चाहता है कि भारत चीन के विकराल रूप से डरकर हर तरह से आत्मसमर्पण कर दे। इस अभ्यास में चीन की मीडिया भी खूब उछल कर ऐसी रिपोर्टें छाप रही है जिससे भारत में खौफ पैदा हो जाए। भारत को यह चेतावनी दी जा रही है कि भारत चीन के विरोधी प्रवृतियों पर न केवल अंकुष डाले बल्कि खुद भी सर्तक रहे।
- चीन की वायु सेना के हेलिकॉप्टरों ने भारतीय सीमा के भीतर अतिक्रमण किया है। यह अतिक्रमण 30 अगस्त, 2009 को किया। चूमार लेक का उत्तर पष्चिमी क्षेत्र है, वहां पर चीन द्वारा खाद्य पदार्थ की सामग्री अनावष्यक रूप से गिराई गई। इस बात की सूचना वहां के स्थानीय लोगों द्वारा भारतीय सुरक्षा अधिकारियों को दी गई। तकरीबन चीन का अतिक्रमण भारतीय सीमा के 1.5 कि.मी. भीतर तक था। इस अतिक्रमण की गंभीरता चीन की विस्तारवादी चरित्र के कारण बढ़ जाती है।
- चीन ने हिन्द महासागर में भारतीय पहल का घोर विरोधी रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह विरोध एक षड्यंत्र का हिस्सा दिखाई देने लगा। चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ प्लर्स' नीति मुख्यतः हिन्द महासागर में अपनी घुसपैठ बनाने से जुड़ी हुई है। कोको आईलैंड में चीनी गुप्तचर पनडुब्बी भारतीय सुरक्षा के लिए खतरे का संकेत है। पूर्व रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस ने चीन की इस योजना का खुलासा 1998–99[22] में किया था। भारत की ओर से कोई ठोस प्रतिक्रियात्मक कदम की अनुपस्थिति में चीन ने 'स्ट्रिंग ऑफ प्लर्स' के अंतर्गत श्रीलंका, बांग्लादेष और म्यांमार तक अपनी पैठ बनाने शुरू कर दी।
- पिछले कुछ वर्षों में चीन द्वारा विभिन्न नदियों की धारा को तोड़ने की कोषिष की जा रही है। उल्लेखनीय है कि भारत की मुख्य नदियां तिब्बत से निकलकर भारत की सीमा में प्रवेष करती हैं। इन्ड्स, ब्रह्मपुत्र और सतलुज नदियां दोनों देषों के बीच बहती हैं। 2005 में प्राचूलेक विवाद दोनों देषों के बीच विवाद का नया कारण बन गया। हिमाचल प्रदेष से करीब 35 कि.मी. दूर प्राचू लेक का निर्माण हुआ है जो कि प्राचू नदी पर बना है। इस विवाद पर तीखा प्रहार करते हुए चीन ने शेष नदियों के बहाव को तबाह करने की धमकी दी।[23] ब्रह्मपुत्र नदी के प्रवाह को चीन ने 12 नवंबर 2010 को रोका था। चीन जानगमु में विधुत परियोजना तैयार कर रहा है जो 38,000 मेगावाट का है।
- चीन–पाक संबंध की व्यापकता भारत–विरोधी आधार पर बनी है। चीन के नेता ने 2005 में पाकिस्तान यात्रा के दौरान यह कहा था कि "चीन पाकिस्तान संबंध हिमालय की षिखाओं से ऊपर है और सागर

की गहराईयों से भी गहरा है।" पाकिस्तान की आण्विक शक्ति चीन की ही भेंट है। भारत की सीमाओं में हमला कर रहे पाकिस्तानी आतंकियों के हाथों में चीन निर्मित आधुनिक हथियार है।[24]

- 2008 में चीन द्वारा घोषित आंकड़े के अनुसार चीन का रक्षा पर खर्च तकरीबन 61 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। लेकिन सिप्री (स्टॉकहाम रिसर्च सेंटर) के अनुसार यह रकम 140 बिलियन डॉलर से ज्यादा है।[25]
- माओ का मानना था कि अगर पूर्वी देष पष्चिमी देषों पर अपना दबदबा नहीं बना सकते तो बेहतर यही है कि पूर्व के शेष देषों पर अपना आधिपत्य कायम किया जाए। अर्थात् माओ की नीति शुरू से ही भारत विरोध की रही थी। जहां भारत साम्यवादी चीन को मान्यता देने वाला पहला देष था और संयुक्त राष्ट्रसंघ के भीतर चीन की सदस्यता की तरफदारी करता रहा वहीं चीन भारत को कमजोर करने की किसी भी अवसर को हाथ से जाने नहीं देता है।

अध्याय – दो

चीन से खतरा कैसे पैदा हुआ?

तकरीबन 2,400 साल पहले झून–जी (298–238 बी.सी.)[26] नामक एक राजनीतिक चिंतक ने कुछ महत्वपूर्ण सामरिक नीतियों की चर्चा की थी। पहला, व्यक्ति स्वभावतः कुटिल और धूर्त होता है। दूसरा, संघर्ष और कलह की स्थिति में ऐसी परिस्थितियां बनती है, जिसमें हर देष को उसका लाभ अपने हक में करने की कोषिष करनी चाहिए। तीसरा, द्विपक्षीय संबंधों को कानूनी रूप देने से पहले अपनी स्थिति इतनी मजबूत कर लेनी चाहिए, जहां से उसका दबदबा हमेषा बरकरार रहे। अगर चीन की सामरिक रणनीतियों की व्याख्या को भारत के साथ जोड़कर देखा जाए तो चीन इन्हीं नीतियों को अपना आधार बनाकर आगे बढ़ता रहा है। शक्ति बंदूक की नली से निकलती है, न कि आदर्षवादी प्रवचनों और शांति पाठ से। ठीक इस सोच के विपरीत जवाहरलाल नेहरू ने "हिंदी–चीनी–भाई–भाई" और "तीसरी दुनिया को एक अलग पहचान दिलाने" की हवाई नीतियों के पीछे दौड़ते रहे। यहीं से शुरू हुआ हार–जीत का खेल। चीन लगातार हिमालयन फ्रंटियर इलाके में फैलता गया और भारत अपना पैर समेटता गया।[27]

चीन ने झून–जी के सिद्धांत को अपने सामरिक विस्तार का आधार बनाया। वर्ष 1949 के बाद चीन अपने चक्रव्यूह का निर्माण करता रहा, और नेहरू की आंखों में धूल भी झोंकता रहा। नेहरू चीन के चक्रव्यूह को समझ नहीं पाए और उसके झासे में फंसते गए। नेहरू ने तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग स्वीकार कर लिया। इसके पहले तक नेहरू की नीति तिब्बत के संदर्भ में चीन के भीतर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में थी। मार्च 1947 में तिब्बत के एक प्रतिनिधिमंडल को एषियन रिलेषन कांग्रेस में आमंत्रित किया गया था। भारत बुलाने के पीछे तर्क यही था कि भारत तिब्बत को एक अलग इकाई के रूप में देखता था। इस सम्मेलन में ब्रिटिष काल में की गई सारी महत्वपूर्ण संधियों पर यथावत पालन की बात दोहराई गई। यही कारण था कि दो वर्ष भारतीय सेना अधिकारी की तैनाती ल्हासा में तिब्बती सरकार के परामर्षदाता के रूप में की गई।[28] जब 1950 में चीन की सेना तिब्बत में प्रवेष करने लगी और तिब्बत को हड़पने की योजना को कार्यरूप दिया जाने लगा तो नेहरू ने इसका जमकर विरोध किया। परंतु नेहरू का यह विरोध केवल शाब्दिक था। अभी तक नेहरू इस भ्रम में थे कि चीन "व्यापक भारत–चीन रिष्ते" को ध्वस्त कर तिब्बत को हड़पने की कोषिष नहीं करेगा, जबकि चीन बड़े ही शातिर अंदाज में भारत के साथ द्विपक्षीय संबंध को बनाए रखने की बात दोहराता रहा, वहीं अपनी कुटिलता के अनुरूप भारत और चीन के बीच 'बफरस्टेट' के रूप में तिब्बत को अपना हिस्सा बना लिया। 1950 से पहले भारत और चीन की सीमा आपस में कभी मिली नहीं थी। अब भारत और चीन एक दूसरे के पड़ोसी हो गए। पहले नेपाल फिर भूटान, मंगोलिया और समीपवर्ती देषों पर अपनी पकड़ मजबूत करता रहा। चीन का सिलसिला यहीं नहीं रूका। म्यांमार, पाकिस्तान, बांग्लादेष और श्रीलंका में भी चीन अपना पैर फैलाता रहा।

चीन पर तिब्बत का दावा तब और मजबूत हो गया जब नेहरू ने तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मान लिया। इसके उपरांत ही चीन ने भारत–तिब्बत से जुड़े क्षेत्रों पर अपनी हकदारी शुरू कर दी। यहां पर

नेहरू चीन की कुटिल चाल में बुरी तरह फंस गए। एक बार धोखा खाने के बाद भी जवाहरलाल नेहरू की आँखें नहीं खुली। उन्हें दोबारा यह उम्मीद जगी की शायद तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मान लेने के बाद चीन भारतीय सुरक्षा लकीर को स्वीकार कर लेगा और तिब्बत की स्वायत्तता को भी मंजूर कर लेगा। हुआ ठीक इसके विपरीत। तिब्बत की स्वायत्तता तो दूर की बात रही, चीन तिब्बत को लेकर भारतीय राज्यों में भी अपना पैर पसारने लगा।

तिब्बत का हड़पना भारत के लिए खतरा कैसे बना?

तिब्बत को हड़पने के उपरांत चीन ने भारतीय सीमा के भीतर घुसपैठ शुरू कर दी। चीन तकरीबन 38 हजार वर्ग कि.मी. का क्षेत्र अक्साई चीन के भीतर अपने कब्जे में लिए हुए हैं जो मुख्यतः लद्दाख का हिस्सा है।[29] 1963 में पाकिस्तान अधिकृत कष्मीर के भीतर का 5,180 वर्ग कि.मी. का पट्टा चीन को सुपूर्द कर दिया। पाकिस्तान की इस करवट से चीन की सामरिक स्थिति और मजबूत हो गई। अब चीन ने इस क्षेत्र को इस्तेमाल करते हुए सिक्यिांग और तिब्बत के बीच सड़कों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। काराकोरम हाईवे ने तिब्बत–कष्मीर–सिक्यिांग और पाकिस्तान को एक साथ जोड़ लिया। दूसरी तरफ चीन ने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में सेंधमारी शुरू कर दी। तकरीबन 96,000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर चीन अपनी दावेदारी पेष करने लगा। अर्थात संपूर्ण अरूणाचल प्रदेष चीन के दक्षिणी भूभाग के रूप में पेष किया गया।ये मांगें चीन तिब्बती संस्कृति और लिपि की आड़ में करने लगा। कई तिब्बती ग्रंथों में तिब्बत और भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों के बीच एक सषक्त सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध की चर्चा है। चीन आज उन्हीं तिब्बती ग्रंथों को अपना आधारभूत धरोहर मानकर भारतीय क्षेत्र को हड़पने की धमकी देता है। यह सब कुछ तिब्बत पर भारत की कमजोर नीति की वजह से हुआ है।

अध्याय – तीन

चीन का सैनिक सिद्धांत और झांसावादी रणनीति

चीन के सैनिक सिद्धांतों में भी हाल के वर्षों में फेरबदल किए गए है। अगर इन फेरबदल को भारतीय सुरक्षा से जोड़कर देखा जाए तो कई चिंता की रेखाएं उभरकर सामने आती हैं। चीन अंतर्राष्ट्रीय या क्षेत्रीय युद्ध का विष्लेषण आधुनिक युद्ध के संदर्भ में करना चाहता है, जिसमें आधुनिक तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस नीति के व्यावहारिक और प्रयोगात्मक विष्लेषण के अनुसार अगर चीन को ऐसा लगे कि उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा और अक्षुण्णता को खतरा उत्पन्न हो गया है, तो वह आक्रमण कर सकता है।[30] चीन का विवादास्पद आण्विक सिद्धांत भी भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। पहले आक्रमण नहीं करने की वचनबद्धता और "सक्रिय सुरक्षा" के बीच के सोच में बहुत गहरी खाई है, जिससे भारत–विरोधी धुंआं निकलता है। चीन के सैनिक सिद्धांत का एक पहलू यह भी है कि चीन दुष्मन देष की सीमा के भीतर घुसकर महत्वपूर्ण आर्थिक और सैनिक स्थलों को ध्वस्त करना चाहता है। पीएलए के द्वारा प्रकाषित पत्र में इन बातों की गहन चर्चा है।[31]

चीन की सैनिक रणनीति आज भी महत्वपूर्ण चिंतक और नीतिकार झूनजी की बातों को मानकर युद्ध में छद्म और वास्तिवकता के बीच ऐसा खेल खेलती है जिसमें विरोधी खेमा हर तरह से धोखा खा जाए। कोषिष यह होती है कि दुष्मन देष किसी भी हालत में हमारी वास्तिवक शक्ति और मंसूबों का अंदाजा नहीं लगा पाए। चीन द्वारा प्रकाषित सैनिक आलेख में इस बात पर भी चर्चा है कि चीन ताईवान, तिब्बत और अरूणाचल प्रदेष के मुद्दों पर आण्विक शक्तियों का प्रयोग कर सकता है।[32] ब्रिगेडियर वी. नायर ने चीन से उत्पन्न आण्विक शक्तियों पर चौकस रहने की चेतावनी दी है। नायर के शब्दों में, चूंकि चीन का आण्विक सिद्धांत पूरी तरह से आक्रामक सोच पर टिका हुआ है, चीन का सैनिक सिद्धांत अरूणाचल प्रदेष को अपने कब्जे में लेना चाहता है। अगर दोनों सिद्धांतों को एक साथ देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अरूणाचल प्रदेष को हथियाने में चीन आण्विक हथियारों का प्रयोग कर सकता है।[33]

चीन अमेरिका से प्रतिस्पर्द्धा में अपने आण्विक हथियारों को अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्रों से जोड़ना चाहता है। भारत का हर छोटा या बड़ा शहर चीन की प्रक्षेपास्त्रों की मारक क्षमता के भीतर है। हाल के वर्षों में चीन ने अंतर्राष्ट्रीय दूरी के प्रक्षेपास्त्र पण्डुब्बियों में भी तैनात कर दी है। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा विषेषज्ञों के अनुसार चीन के पास करीब 240 से अधिक आण्विक बम हैं।[34] महत्वपूर्ण आण्विक प्रक्षेपास्त्रों की श्रंखला में डी. एफ–31, अंतर्राष्ट्रीय बैलिस्टिक प्रक्षेपास्त्र (आई.सी.बी.एम), डी.एफ.–4, डीएफ.–21 जैसे अनेकों प्रक्षेपास्त्र उसके पास है। उनमें से कई आण्विक प्रक्षेपास्त्र तिब्बत के पठारी ठिकानों पर तैनात हैं। ऊंचाई पर होने का फायदा चीन को 1962 के युद्ध में प्राप्त हुआ, जो आज भी कायम है।

गूगल अर्थ के द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण ठिकानों में दो ऐसे महत्वपूर्ण ठिकानों की तस्वीरें सामने आई है जिसे सुरक्षा विषेषज्ञ हान्स क्रिस्टेन्सन भारतीय सुरक्षा के लिए अत्यंत गंभीर मानते हैं। चीन ने 58 लॉचिंग स्थल का निर्माण डोलिधां और डा–कूदम में बनाया है जो तिब्बत के अंग हैं। चीन ने दक्षिणी समुद्र सागर

में आण्विक पनुडुब्बियों की तैनाती 'सानया' में की है। भारत की चिंता यह भी है कि ये आण्विक पनडुब्बी 'मालक्का स्ट्रीट से महज 1,200 मील की दूरी पर स्थित है। भारत का अंडमाण निकोबार का क्षेत्र वहां से महज 2,000 मील की दूरी पर स्थित है।[35]

चीन से पर्यावरण को खतरा

तिब्बत को हड़पने के बाद चीन ने तिब्बत को न केवल सैनिक और आण्विक अड्डों में तब्दील कर दिया बल्कि तिब्बत के महत्वपूर्ण हिस्सों को आण्विक कूड़ेदान के रूप में प्रयोग करने लगा। चीन ने ऐसा करने के लिए तिब्बत के घने जंगालों को काटना शुरू किया। तकरीबन 2.5 मिलियन वर्ग कि.मी. में फैली तिब्बत की हरियाली और खूबसूरती चीन की राक्षसी नीतियों की षिकार बन गई। उल्लेखनीय है कि भारत के मैदानी ईलाकों में बहने वाली महत्वपूर्ण नदियाँ तिब्बत से निकलकर नेपाल के रास्ते भारत की ओर अपना उदगम बनाती है। ये नदियाँ हैं ब्रह्मपुत्र, यांगसी और सतलज। न केवल भारत में बल्कि बांग्लादेष, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, थाईलैंड, बर्मा, वियतनाम, लाओस और कंबोडिया जैसे अन्य देष शामिल हैं जहां तिब्बत से निकलने वाली नदियां बहती हैं। ये नदियां इन देषों की मेरुदण्ड है। ये न केवल पानी की कमी को पूरा करती है बल्कि उपजाऊ मिट्टी भी इनके बहाव के साथ मिलकर इन देषों के फसल को उपजाऊ बनाता है। मोटेतौर पर इन नदियों के तटों पर विष्व की करीब आधी आबादी बसती है।

पिछले चार दषकों में तिब्बत की त्रासदी से इन देषों का मौसम बुरी तरह प्रभावित हुआ है। विषेषकर भारत मौसम के मिजाज में आए बदलाव से बाढ़ का तांडव या भयंकर सूखे की संकट से जूझता रहा है। एषिया के 85 आबादी की जीवन शैली तिब्बत से बहने वाली नदियों से प्रभावित होता है। अगर चीन के द्वारा सैनिक समीकरण के नाम पर तिब्बत की पहाड़ियों पर बड़े–बड़े डैम बनाए जाते हैं तो भारत को प्रत्यक्ष नुकसान होगा। दूसरी तरफ तिब्बत के एक हिस्से को चीन द्वारा आण्विक अवषेष कचड़े में तब्दील कर दिया है। इसकी वजह से ये परमाणु–अवषिष्ट तत्व के मुहाने से बहते हुए भारतीय खेत खलिहानों और लोगों के घरों में पहुंच रहे हैं।

इस बर्बादी के पीछे भरत की ढुलमुल नीति और चीन की भेडिया मानसिकता है। 1950 के पहले तिब्बत भारत और चीन के बीच 'बफर स्टेट' हुआ करता था। दलाईलामा ने इस पूरे क्षेत्र में और विष्व शांति के लिए तिब्बत को पूरी तरह 'आण्विक–मुक्त क्षेत्र' घोषित करने की बात 1980 के दषक में कही थी। लेकिन माओ शुरू से ही आण्विक हथियारों को शक्ति के प्रतीक मानते थे। माओ उत्तराधिकारियों ने इस सोच को और गहराई से लागू किया। आज चीन की सोच ज्यादा आक्रामक और विस्तारवादी रूप धारण कर चुकी है।

अध्याय – चार

चीन–पाक गठजोड़ और भारतीय सुरक्षा

पिछले कुछ वर्षों में चीन की परिवर्तित कष्मीर नीति ने भारतीय सुरक्षा में नए सिरे से सेंध लगाने की तैयारी शुरू कर दी है। हिमालय के काराकोरम मुहाने पर चीन–पाक की संयुक्त घेराबंदी ने भारतीय सुरक्षा को घेर लिया है। इस गठबंधन को 'ची–पाक के नाम से जाना जाता है। उल्लेखनीय है कि इस घेराबंदी की ताकत आण्विक प्रक्षेपास्त्रों के बूते पर टिकी हुई है। चीन की सामरिक चाल के जरिये पाकिस्तान के आण्विक हथियार से पूरी तरह लैस कर दिया गया।

पाक–चीन गठबंधन की शुरूआत शीत युद्ध के दौरान हुआ। शीतयुद्ध के दौरान पाकिस्तान चीन संबंध की बुनियाद सामरिक समीकरणों के तहत बनी। पाकिस्तान 1971 के युद्ध में भारत से बूरी तरह परास्त खाने के बाद एक ऐसे सहयोगी की खोज में था, जो उसकी भारत–विरोधी यात्रा में उसका साथ दे। इसी बनते समीकरण के कारण चीन और पाकिस्तान एक दूसरे के नजदीक आए। शुरुआती दौर में चीन ने कष्मीर को विवादास्पद मुद्दा बनाकर पाकिस्तान की नीति का प्रत्यक्ष रूप से समर्थन किया। चीन से अस्त्र–षस्त्र की सप्लाई सहजता से की जाने लगी। विदित है कि चीन का सीधा भूमिगत संपर्क दक्षिण एषिया के किसी देष से नही था लेकिन काराकोरम हाइवे बन जाने के बाद दक्षिण एषिया और हिंद महासागर से उसका सीधा संपर्क कायम हो गया। इस मुहिम में चीन का दबदबा सियाचिन ग्लेषियर पर भी बनने लगा सियाचिन कष्मीर मुद्दे से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। सियाचिन भारत के जम्मू –कष्मीर राज्य के उत्तर पष्चिमी क्षेत्र में स्थित हैं। दूसरी तरफ सियाचिन से चीन की दक्षिणी सीमा मिलती है जहां से पूर्वी काराकोरम पहाड़िया नजदीक है। यही पर अक्साई चीन भी मिलता हैं। 1985 में पाकिस्तान ने चीन को गिलगिट क्षेत्र में सैनिक छावनी बनाने की इजाजत दे दी। 1985 में चीन–पाकिस्तान ने मिलकर सियाचिन और नुब्राघाटी क्षेत्रों में संयुक्त सैनिक अभ्यास किया।

चीन ने हाल के वर्षों में सुनियोजित ढंग से भारतीय सीमाओं में अपनी सैन्य गतिविधियां भी बढ़ा दी है। हिमालय के उत्तर में घुसपैठ के अलावा इसने तिब्बत के पठारी इलाको में सुखोई–27 लड़ाकू विमानों और आत्याधुनिक सेनाओं के साथ जमीनी और हवाई सैन्य अभ्यास किया। चीन पाकिस्तान को दक्षिण एषिया में उत्तर कोरिया का रूप देना चाहता है। उसने पाकिस्तान को कई तरह की मिसाइलों की आपूर्ति की है, जिनका मुख्य निषाना भारत है। विष्लेषकों का कहना है कि पाकिस्तान का अपना कोई परमाणु कार्यक्रम नही है, चीन का आदेष ही वहां लागू होता हैं। विष्व के अन्य देषों ने चीन के इस दोहरे चरित्र को अनदेखा किया है। अमेरिकी स्थित संस्था **साइंस एण्ड इन्टरनेषनल सेक्यूरिटी** द्वारा लिए फोटोग्राफ से इस बात की पुख्ता जानकारी मिलती हैं कि पाकिस्तान ने चीन की मदद के जरिए खुषाब द्वितीय और खुषाब तृतीय ऐटमी संयंत्रों का निमार्ण पूरा कर लिया है। पाकिस्तान के पास आज प्लूटोनियम बम तैयार है। एटोमिक साइंटिस्ट की रिपोर्ट में इस बात का जिक्र है कि पाकिस्तान के पास भारत से ज्यादा आण्विक बम है।

अत्याधुनिक प्लूटोनियम बमों को पाकिस्तान में नए प्रक्षेपास्त्रों के सहारे भारत के किसी भी कोने में गिराया जा सकता हैं। पाकिस्तान की "फतेह जंग" मिसाईल इस्लामाबाद से महज 50 किमी. की दूरी पर हैं। वही पर षाहीन प्रथम औंर षाहीन द्वितीय प्रक्षेपास्त्रों का निमार्ण हुआ है। ये दोनो अन्तर्देषीय प्रक्षेपास्त्र है जो कि चीन की भेटं हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय विष्लेषक यह मानते है कि अगर चीन की मिलीभगत पाकिस्तान के साथ नही होती और पाकिस्तान ने पाक–अधिकृत कष्मीर का हिस्सा चीन को नही दिया होता तो षायद कष्मीर समस्या का हल खोज लिया जाता। भुट्टो ने 17 जुलाई 1963 को पाकिस्तान के संसद में यह कहा था कि अगर कष्मीर मुद्दे को लेकर भारत के साथ युद्ध होता है तो चीन पाकिस्तान की हर संभव मदद करेगा। पाकिस्तान की टिप्पणी के जवाबों में चीन के प्रधानमंत्री ने कहा था कि पाकिस्तान और चीन की मित्रता "हिमालय से ऊंचा और सागर से गहरा है।" चीन इस सोच के तहत कष्मीर को विवादास्पद मुद्दा मानता और पाकिस्तान की सोच को प्रश्रय देता रहा है। 1979[36] में अटल बिहारी बाजपेयी बीजिंग यात्रा के दौरान चीन के मौलिक सोच में बुनियादी परिर्वतन दिखा। एक विदेष मंत्री के रूप में बाजपेयी ने डेंगष्योपेंग को यह समझाने की कोषिष की कि कष्मीर मुद्दे पर चीन की अनावष्यक मतभेद से दोनो देषों के संबंध को चोट पहुंच रही है। इससे लाभ किसी को नही मिल रहा। बाजपेयी की स्पष्टवादिता ने डेंग की कष्मीर नीति बदली। चीन कष्मीर को एक द्विपक्षीय मुद्दा मानने लगा और और इस बात की वकालत करने लगा कि कष्मीर का हल भारत और पाकिस्तान के द्वारा सौहार्द्रपूर्व वातावरण में ढूंढा जाना चाहिए। चीन की यह सोच तकरीबन तीन दषकों तक कायम रही।

पिछले तीन चार वर्षो में चीन की सोच में कटुता पुनः नजर आने लगी । चीन की वर्तमान व्यवस्था ने डेग की बातों को भुलाकर कष्मीर पर विरोधी तेवर अपना रखा है। यही कारण था लद्दाख को चीन का हिस्सा मानना, इंटरनेट पर कष्मीर के नक्षे को तोड़ मोड़कर दिखाना, और जम्मू–कष्मीर के लोगों को लूज पेपर वीजा देने की परंपरा का षुरूआत करना, जो उसके बदलते तेवर और मिजाज का नतीजा था।

सुरक्षा विषेषज्ञ भास्कर राव के अनुसार चीन ने पष्चिमी सीमा लद्दाख के नजदीक 'पागोंज तासो' में अपनी पहुंच बना ली है। चीन के सैनिक विस्तार से भारतीय सुरक्षा प्रबंधतंत्र चिंतित है।

लद्दाख का सीमाई क्षेत्र एक हाथ की मुट्ठी जैसा दिखता है, जिसके तीन महत्वपूर्ण हिस्से चीन के प्रभाव में है। चीन चौथे मुहाने को अपने कब्जे में करने की कोषिष कर रहा है जिसे 'ट्रींग हाईट' के नाम से जाना जाता है। प्रो. कोडांपल्ली (प्रोफेसर जवहारलाल नेहरू विष्वविद्यालय) के अनुसार चीन के इस विस्तार से भारत की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। वर्ष 2009 में जम्मू–कष्मीर की राज्य सरकार और केंद्रीय सरकार को इस खतरे की सूचना थी। लेह में चीन की घुसपैठ की जानकारी थी। यह क्षेत्र हिमाचल प्रदेष से बिल्कुल सटा हुआ है। अगर पष्चिमी मुहाने पर चीन की घुसपैठ को भारतीय सरकार नजरअंदाज करती रही तो जम्मू–कष्मीर से लेकर हिमाचल का रेंज भी चीन के कब्जे में आ जाएगा और भारत का पष्चिमी मुहाना पूरी तरह से असुरक्षित हो जाएगा। 22 दिसंबर 1959 को संसद में पूर्व प्रधानमंत्री बाजपेयी ने चीन की हरकतों को देखते हुए यह कहा था कि "अक्साईचीन में चीन द्वारा बनाए जा रहे सड़क का उपयोग

सैन्यतंत्र के लिए होगा या आम लोगों की सुविधा के लिए, इस बात का फैसला कौन करेगा? दरअसल चीन की मानसिकता को देखते हुए इस बात की पूरी उम्मीद है कि इसका प्रयोग सैन्य तंत्र के लिए ही होगा"। आज एक बार फिर से चीन भारतीय सीमा में अतिक्रमण कर रहा है। इसलिए उसने पाक–अधिकृत कष्मीर को जायज और असल कष्मीर जो भारत का हिस्सा है, उसे विवादास्पद मानकर अपनी मंषा जाहिर कर दी है।

अध्याय – पांच

अरूणाचल को हड़पने की चाल

नवंबर 2006 में जब चीन के प्रधानमंत्री हू–जिनटाओ भारत की यात्रा पर थे उसी दौरान भारत में चीन के राजदूत सन यूक्सी ने कहकर हंगामा खड़ा कर दिया था कि पूरा का पूरा अरूणाचल प्रदेष चीन का हिस्सा है, तवांग उसी हिस्से का एक अंग है, इसलिए उस पर पूरा अधिकार चीन का है।" उसी दौरान चीन के एक सरकारी संस्था द्वारा प्रकाषित पत्र में यह कहा गया था कि चीन 1962 जैसी भूल नहीं करेगा। विजित इलाकों को लौटाया नहीं जाएगा। भारत को यह बात अच्छी तरह से समझ में आनी चाहिए। विगत में चीन न केवल भारत के साथ बल्कि अन्य देषों के साथ युद्ध की महज संभावना से निपटने के लिए व्यापक स्तर पर सैनिक अभ्यास किए गए है। मसलन 1950, 1962, 1969 और 1979 में ऐसे प्रयास चीन के द्वारा किया जा चुका है। ये सारे अभ्यास चीन द्वारा उस समय किया गया जब चीन सैनिक रूप से बहुत मजबूत नहीं था। आज तो चीन एक महाषक्ति का रूप ले चुका है। चीन की चाल का अंदाजा एक ऑनलाईन मैपिंग से भी होता है। यह ऑनलाईन सरकारी तंत्र का हिस्सा है। यह ऑनलाईन गूगल के प्रतिद्वंदी के रूप में खड़ा किया गया। ऑनलाईन चीनी भाषा में है जिसके पाठक 40 करोड़ से भी ज्यादा लोग हैं। इस मानचित्र में अरूणाचल प्रदेष को चीन का भाग दिखाया गया है। इस मानचित्र में दक्षिण हिस्से को गौण मानकार उत्तर–पूर्वी हिस्सा आसाम तक को चीन के हिस्से के रूप में दिखाया गया है। कष्मीर के अक्साई चीन के हिस्से को चीन के उत्तर पष्चिम अंग के रूप में दिखाया गया है। यह सब कुछ चीन की साम्यवादी सरकार के सर्वे और मानचित्र विभाग ने तैयार किया है। अरूणाचल प्रदेष की कुल सीमा तकरीबन 90,000 वर्ग किमी. की है जिसमें चीन 83,743 किमी. तक के हिस्से पर अपना पुष्तैनी अधिकार मानता है। इस पूरे उपक्रम ने मैकमहोन लाईन और वास्तविक सीमा रेखा की मान्यता पूरी तरह से ध्वस्त हो जाती है। जैसा कि सभी जानते हैं कि चीन शुरू से ही मैकमहोन लाईन को मानने से इंकार करता है जबकि भारत इस लाईन को आज भी भारत और चीन की अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा मानता है।

चीन अपने प्रयास को सफल बनाने के लिए भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों में अलगाववादी तत्वों को बढ़ावा दे रहा है। भारतीय गुप्तचर संस्थाओं की रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि चीन उत्तर पूर्वी राज्यों में तैनात भारतीय समीकरण की तैयारी की पूरी जानकारी अलगाववादी तत्व चीन तक पहुंचाते हैं। ऐसा होने से चीन को हर भारतीय पहल की जानकारी रहती है। हाल ही में नागालैंड का अलगाववादी संगठन नागालीम के नेता एथोंनी को जब नेपाल में पकड़ा गया तो उसने यह बात कबूल की कि कैसे चीन को भारतीय सैन्य समीकरण की पूरी जानकारी रहती है। चीन के एक सरकारी थींक टैंक ने एक पत्र प्रकाषित कर भारत को कई खंडों में तोड़ने की मंषा जाहिर की है। चीन का मानना है कि भारतीय संघ पूरी तरह से बालू की भीत पर टिका हुआ है। महज एक धक्का देने से बालू की भीत कई खंडों में टूट कर बिखर जाएगा।

रक्षा विष्लेषक भारत वर्मा तो यहां तक कहते हैं कि चीन 2012 तक भारत पर आक्रमण कर सकता है। उनका विषलेषण या तर्क कई ठोस प्रमाणों पर आधारित है। वर्मा के अनुसार अरूणाचल प्रदेष के बगैर तिब्बत पर संकट के बादल मंडराता रहेगा। माओ ने तिब्बत को लेकर 1949 में ही कहा था कि हिमालय के तटवर्ती इलाके दांत की तरह है जिनके बंद हो जाने से जिह्वा सुरक्षित रहता है अन्यथा बाहरी शक्तियों की घुसपैठ का खतरा हमेषा बना रहेगा।[37]

अध्याय – छह

नेपाल में चीन की विस्तारवादी नीति और भारत की असुरक्षा

नेपाल, चीन और भारत के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। ब्रिटिष राज में नेपाल की सामरिक कद उतना बड़ा नहीं था जितना की आज है। परिवर्तित परिस्थितियों में नेपाल की अहमियत बढ़ गई है। नेपाल के भीतर बदल रहे राजनीतिक रंग ने चीन की भूमिका को और विषिष्ट बना दिया है। नेपाल की माओवादी घटक चीन की मदद से सत्ता हड़पने की फिराक में रहते हैं। कुछ महीने पहले चीन द्वारा नेपाली सांसदों की खरीद फरोख्त का रहस्योदघाटन का पर्दाफाष हुआ। चीन की इस पहल ने भारतीय सुरक्षा के लिए नई चिंता पैदा कर दी है। चिंता के और कई कारण हैं।

- चीन तिब्बत के दूसरे महत्वपूर्ण शहर झिज्जे से नियाग्जी को रेल लाईन से जोड़ने की योजना बना रहा है। यह क्षेत्र भारत–नेपाल सीमा से बिल्कुल सटा हुआ है। चीन की रेल परियोजना काठमांडू तक ले जानी की है। 2009 में नेपाल के प्रधानमंत्री ने चीन की रेल लाईन काठमांडू तक ले जाने की बात कही। चीन पहले से ही तिब्बत को नेपाल के एक शहर सयाब्रूवेसी तक 17 कि.मी. लम्बी सड़क निमार्ण का काम शुरू कर चुका है। अगर यह सड़क योजना पूरी कर ली जाती है तो बीजिंग और दिल्ली के बीच यात्रा मोटरगाड़ी से की जा सकती है। आर्थिक दृष्टिकोण से यह बदलाव तो बड़ा लुभावना लगता है लेकिन सच्चाई यही है कि ऐसी सुविधाओं का प्रयोग चीन मुख्यतः अपने सैन्य व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए ही करता रहा है। इसलिए भविष्य में यह भारतीय सुरक्षा के लिए एक कठिन चुनौती होगी।
- इंटरनेषनल कंपेन फौर तिब्बत ने 2009 की अपनी रिपोर्ट इस तथ्य का खुलासा किया था कि चीन की पकड़ नेपाल की राजनीति में तेजी से फैल रही है। चीन के इषारे पर नेपाली तिब्बतियों के साथ बदसलूकी कर रहा है। कई प्रदर्षनकारियों को जेल के भीतर डाल दिया गया है। चिंता का कारण यह है कि चीन नेपाल में घुसपैठिए की तरह अपना रास्ता बना रहा है।
- माओ की सामरिक सोच में पांच उँगलियां ही भारत और चीन के बीच 'बफर स्टेट' के रूप में होनी चाहिए। नेपाल के रास्ते से तिब्बत तक पहुंचने का डगर सबसे सुलभ और सुविधाजनक है। चीन की नजरों में भारत का नेपाल से विषेष संबंध, तिब्बत की सुरक्षा के लिए खतरा है। इसलिए चीन ने तिब्बत को हड़पने के उपरांत ही नेपाल में अपनी चालें चलनी शुरू कर दी। चीन के नेताओं ने खुलेआम यह कहना शुरू कर दिया कि संघर्ष की स्थिति में नेपाल अकेले नहीं होगा।
- चीन की नेपाल नीति मुख्यतः हस्तक्षेपवादी है। चीन ने नेपाल में अपनी नीतियों का अनुसरण अपने द्वारा निर्देषित शोध संस्थाओं की अनुषंसा पर कर रहा है, जो नेपाल के विभिन्न शहरों में स्थापित किए गए हैं। 50 से ज्यादा ऐसे संस्थान बटवाल, बानेपा, सनखुवासभा, पोरवरा, विराटनगर, मोरंग, सुनसारी, चितवन, नेपालगंज और लुंबनी में काम कर रही है। भीम सिंह (भूतल निदेषक साउथ एषिया) के अनुसार

31 से ज्यादा चीनी अध्ययन संस्थान नेपाल के दक्षिणी हिस्से में है जहां पर भारत–नेपाल की सीमा मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि चीन अंतर्राष्ट्रीय रेडियो ने नेपाल में एफ.एम. रेडियों की शुरूआत की। इस रेडियो प्रोग्राम का मकसद भी चीन की पकड़ को नेपाल में स्थापित करना है। यह सब नेपाल में स्थित चीनी दूतावास के निर्देषन में किया जा रहा है। 2005 में चीन–नेपाल सहयोग संस्था की शुरूआत की गई। चीन बहुमुखी प्रयोजनाओं द्वारा नेपाल की भारत–निर्भरता को पूरी तरह से समाप्त कर देना चाहता है।

- 2007 से लेकर आजतक चीन के 17 से ज्यादा उच्च अधिकारी नेपाल की यात्रा पर आ चुके हैं। जिसमें चीन के मेजर जनरल और तिब्बत के उप कमांडेट की गुप्त वार्ता भी शामिल है। चीन नेपाल में सैनिक मदद के जरिए भारत विरोधी तेवर को हवा दे रहा है।

उल्लेखनीय है कि चीन की सत्ता पर वर्तमान चीनी राष्ट्रपति हू–जिनटाओ की पकड़ किसी अन्य नेता से कही ज्यादा है, क्योंकि राष्ट्रपति पद के साथ कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव भी है। सेना पर भी उनकी पकड़ है। वे राष्ट्रपति बनने के पहले तिब्बत के गर्वनर थे। आज जो चीन की नीतियों में भारत–विरोधी भावना का प्रसार हुआ है वह जिनटाओ की ही देन है। एक ओर चीन भारत के साथ मित्रवत संबंध बनाकर अपनी आर्थिक समृद्धि बढ़ाना चाहता है, वही दूसरी तरफ अपनी सामरिक रणनीतियों को भी मजबूत इरादों के साथ नई उंचाइयों पर ले जाना चाहता है।

अटल बिहारी बाजपेयी ने चीन के वास्तविक चेहरे से नकाब उठाते हुए 22 दिसम्बर 1959 को संसद में प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू को सचेत करते हुए ये शब्द कहे थे, "चीन की नीति आक्रामक और विस्तारवादी दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है। हमारे रक्षामंत्री ने यह कहकर देष को भूल भूलैया में डाल दिया है कि भारत और चीन के संबंध दो हजार वर्ष पुराने सांस्कृतिक आयाम से जुड़े हुए हैं। हमारे प्रधानमंत्री चीन के हमले और प्रसार से सषंकित हैं। ऐसे माहौल में हम किसका भरोसा करें? रक्षा मंत्री का या प्रधानमंत्री का? लेकिन मैं यहां पर जोर देकर यह कहना चाहता हूँ कि जिन 2000 वर्षों की बात हमारे रक्षामंत्री कह रहे हैं वे बातें पुरानी हो चुकी है। उसका कोई मतलब नहीं है। साम्यवादी चीन ने उन सारे मूल्यों और तथ्यों को मिटा दिया है, जिसे चीनी इतिहासकार या पर्यटक बुद्ध की मिसाल लेकर भारत–चीन के बीच एक सांस्कृतिक आयाम की अलख जगाना चाहते हैं। हयू–सयांग और फाहियान की बातें कब्र में दफनाई जा चुकी है। नया साम्यवादी चीन एक भूखे भेड़िए की तरह आक्रामक मूड में है। वह परिस्थितियों के अनुरूप गिरगिट की तरह अपना रंग बदलता है। लेकिन उसका मौलिक रूप हस्तक्षेप और आक्रमण के जरिए अपने सामरिक विस्तार को फैलाना है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ वर्षों में चीन ने अपने विस्तारवादी नीति को कैसे आगे बढ़ाया है? मंचूरिया जो 1911 तक चीन पर शासन करता था, उसका नामो निषान मिटा दिया गया। वह अब चीन के उत्तर–पूर्वी राज्य का हिस्सा बनकर रह गया है। पूर्वी तुर्किस्तान मूलतः सिक्यिांग बन गया है। मंगोलिया के आधे से अधिक हिस्से को चीन में मिला लिया गया है। तिब्बत जो भारतीय सुरक्षा के लिए अहम हिस्सा हुआ करता था, वह भी चीन की विस्तारवादी नीति का षिकार बन चुका है। चीन का अपना मूलभूत क्षेत्रफल केवल 14 लाख वर्ग मील तक सीमित था लेकिन आज चीन की सीमा 22 लाख वर्ग मील तक फैल चुकी है। यह सब कुछ मंचूरिया, मंगोलिया, तिब्बत, कांसू, चिघाई और सिक्यिांग

को हड़पने से बनी है। अब इसकी गिद्ध दृष्टि भारत के 48 हजार वर्ग मील पर टिकी हुई है। एक बौद्ध भिक्षु ने इस बात का खुलासा किया है कि चीन तिब्बत को हाथ का तलहटी समझता है जिसकी पांच अंगुलियां है। ये अंगुलियां लद्दाख, भूटान, सिक्किम, नेपाल और आसाम है। अगर समय रहते चीन की इस नीति को चुनौती नहीं दी गई तो भविष्य में हमारी सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी।[38]

चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा ने भारत की चिंता को और बढ़ा दिया है। पूर्वी और पष्चिमी सीमाओं पर चीन के अतिक्रमण ने और संदेह की स्थिति पैदा कर दी है। चीन अपनी कुटिलता से आर्थिक और व्यापारिक संबंधों की आड़ में सामरिक विस्तार को ढंकना चाहता है। साथ ही चीन आर्थिक रूप से भारत को एक अदना सहयोगी भर बनाने की पूरी कोषिष कर रहा है। उल्लेखनीय है कि द्विपक्षीय व्यापार में भारत 19 अरब डॉलर का घाटा उठा रहा है। चीन की संरक्षणवादी नीतियां इसकी जड़ में है। 2009–10 में कुल 42.4 अरब का व्यापार हुआ जिसमें चीन का निर्यात 30.8 अरब डॉलर एवं भारत का केवल 11.6 अरब डॉलर हुआ। इस वर्ष व्यापार का आंकड़ा 60 अरब डॉलर तक हो सकता है। लेकिन लाभ का पलड़ा चीन की ओर झुका हुआ है।

चीन भारत के साथ व्यापार और भारतीय सुरक्षा में सेंधमारी दोनों एक ही साथ नहीं कर सकता। भारत के चारों तरफ चीन का 'स्ट्रिंग' ऑफ पर्ल्स' मजबूत होता जा रहा है। यह स्ट्रिग दक्षिणी चीनी प्रांत हेनान से कोको की निगरानी चौकी, थियाग्गयी और म्यांमार में जाड़ेटम्यी क्युन बंदरगाह सुविधा में श्री लंका में हम्बन टोटा बंदरगाह, बांग्लादेष में चंटगांव और पाकिस्तान के अरब सागर के ग्वादर तक जाती है। चीन पूरी तरह से तैयार है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन की विदेष नीति में उग्रता देखी जा सकती है। चीन की उग्रता और विस्तारवादी नीति से सबसे अधिक खतरा भारत को ही है।

भारत चीन संबंधः महत्वपूर्ण घटनाएँ

- मार्च 1948– चयांग काईसेक ने भारत में आयोजित एषियन रिलेषन कांफ्रेंस में तिब्बत प्रतिनिधि मंडल का घोर विरोध किया।
- मार्च 1948 – भारत ने अमेरिकी दबाव के विरूद्ध चीन को लामबद्ध करने की नीति का विरोध किया।
- 30 दिसंबर 1949 – भारत बर्मा के बाद दूसरा महत्वपूर्ण गैर साम्यवादी से बना जिसने साम्यवादी चीन को मान्यता दी।
- नवंबर 1950 – भारत ने अमेरिकी नीति का विरोध किया जिसमें कोरिया विवाद के अंतर्गत चीन को दोषी माना गया था।
- नवंबर 1950 – नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को शामिल करने की वकालत की।
- मार्च 1955 – भारत ने चीन के मानचित्र में नेफा के हिस्सों को दर्षाने का विरोध किया।
- 23 जनवरी 1959 – चीन के प्रधानमंत्री ने पहली बार यह कहा कि लद्दाख और नेफा में तकरीबन 40,000 स्क्वायर कि.मी. पर चीन का हक है।
- 3 अप्रैल 1959 – दलाई लामा तिब्बत से भागकर भारत की शरण में आ गए।
- 7 सितंबर 1959 – नेहरूजी ने चीन के खतरे को लेकर संसद में प्रथम श्वेत पत्र को जारी किया।
- 25 अप्रैल 1960– चीन ने भारत द्वारा तैयार की गई सीमा रिपोर्ट को मानने से इंकार कर दिया।
- 1962– भारत–चीन युद्ध जिसमें चीन ने भारत के आक्साईचीन को कब्जे में कर लिया।
- 2 सितंबर 1962 – चीन की सेना यागला क्षेत्र में भारतीय सीमा के दो कि.मी. भीतर तक घुस आए।
- 18 नवंबर 1962 – चीन की सेना में बोमडीला और नेफा क्षेत्र को अपन कब्जे में कर लिया।
- 23 मार्च 1963 – तिब्बत की पठारी पर चीन ने अपनी सेना के अतिरिक्त टुकड़ी को तैनात किया। इस बदलाव से भारतीय सुरक्षा खतरने में आई।
- सितंबर 1965 – चीन ने भारत–पाक (1965) के दौरान खुल्लम–खुल्ला पाकिस्तान का समर्थन किया और युद्ध के लिए भारत को दोषी माना।
- 1967– सिक्किम में भारत–चीन झड़प, जो मुख्यतः नाथु–ला और चा–ला घटानाएँ प्रसिद्ध थी।
- मई 1974 – भारत के द्वारा शांतिपूर्ण आण्विक परीक्षण को चीन ने जमकर भर्त्सना की।
- 1986–87 – अरूणाचल प्रदेष में चीन और भारत के बीच झड़प हुई।
- 1988 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा और शांति सदभावना के माहौल में सीमा विवाद का हल।
- 1993– पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंहा राव और लीपेंग के बीच वार्ता और सीमा विवाद पर समझौता।
- 1998 – भारत के द्वारा आण्विक विस्फोट

- मई 1998 – पूर्व रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस ने चीन को दुषमन नम्बर–1 माना।
- जून 1998 – चीन द्वारा भाारत को आण्विक बमों को नहीं बनाने की अपील।
- अगस्त 1999– चीन ने भारतीय अपील को ठुकरा दिया जिसमें यह कहा गया था कि चीन लद्दाख में सड़कों का जाल बना रहा और भारतीय सीमा के भीतर अतिक्रमण कर रहा है।
- जनवरी 2000 – चीन की सेना ने भारतीय सीमा के भीतर घुसकर बंकर का निर्माण लद्दाख और अक्साईचीन में किया।
- जून 2003– पूर्व प्रधानमंत्री बाजपेयी की चीन यात्रा और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने की कोषिष। सीमा व्यापार के तहत सिक्किम और तिब्बत के बीच आने–जाने की अनुमति
- 2004 – दोनों देषों के द्वारा सिक्किम में नाथू–ला और जेलेप–ला मुहानों को खोलने की आजादी। ऐसा करना दोनों देषों के हित में माना गया।
- अप्रैल 2005 – चीन के प्रधानमंत्री वेनजिबाओ की भारत यात्रा। दोनों देषों के द्वारा सहयोग और सामरिक मुद्दों पर बातचीत।
- नवंबर 2006 – चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ की भारत यात्रा। दोनों देषों के द्वारा 10 महत्वपूर्ण सामरिक मसलों पर आम सहमति।
- जनवरी 2007 – चीन द्वारा अंतरिक्ष हमले की तैयारी। चीन ने अंतरिक्ष में 537 कि.मी. मौसम की जानकारियों के लिए काम कर रहे अंतरिक्ष पर हमला। पूरी दुनिया चीन के कारनामों से अचंभित रह गई। पेंटागन ने चीन के आक्रामक नीतियों को दुनिया के लिए खतरनाक माना।
- 13 जनवरी 2008 – भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की चीन यात्रा। कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम सहमति
- जून 2008 – चीन की सेना द्वारा भारतीय सीमा सिक्किम में घुसपैठ और पुनः वापस हो जाना। सिक्किम का यह क्षेत्र फिंगर एरिया के रूप में जाना जाता है। चीन इस क्षेत्र में तकरीबन 2.1 कि.मी. जो उत्तरी सिक्किम का हिस्सा है, चीन उसे अपना क्षेत्र मानता है।
- मार्च 2009 – चीन ने अरूणाचल प्रदेष के विकास के लिए एषियन विकास बैंक की लोन राषि को रोकने की कोषिष की।
- अगस्त 2009 – दो चीनी वायु सेना के हेलीकॉप्टर भारतीय सीमा का उल्लंघन करते हुए लेह के चुनार एरिया में खाद्य पदार्थ को ड्राप किया।
- अगस्त 2009 – भारत और चीन की सेना के बीच सिक्किम में झड़प।
- सितंबर 2009 – चीन की सीमा तकरीबन 1.5 किमी भीतर तक भारतीय सीमा में प्रवेष कर गई।
- सितंबर 2009 – दलाई लामा की अव्यात्मिक यात्रा द्वारा चीन का विरोध किया गया।
- अक्टूबर 2009– जम्मू–कष्मीर के लोगों को लूज पेपर वीजा दिया जाना।

- अक्टूबर 2009 – चीन ने मनमोहन सिंह की अरूणाचल प्रदेष यात्रा का विरोध किया। पूर्व विदेष सचिव ने चीन विरोध को गलत और अनैतिक करार दिया।
- नवंबर 2009 – चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी के मुहाने पर बांध बनाने की पुष्टि।
- अप्रैल 2010 – भारतीय गृहमंत्री की तबांग यात्रा।
- सितंबर 2010 – भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने चीन की नीति को खतरनाक माना जिसके तहत भारत से दक्षिण एषिया में घेरने की कोषिष की जा रही है।
- अक्टूबर 2010 – भारत सेना प्रमुख ने चीन की चाल को भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया।
- अक्टूबर 2010 – पूर्व रक्षा मंत्री और समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह ने संसद में चीन के मंसूबों को अत्यंत ही खतरनाक मानते हुए यह कहा कि चीन भारत पर हमले की तैयारी कर रहा है।
- दिसंबर 2010 – चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा व्यापार पर समझौता, सीमा विवाद पर आष्चर्यजनक चुप्पी।
- जनवरी 2011 – चीन की सेना का वास्तविक नियंत्रण रेखा का उल्लंघन गोबीर गांव में एक यात्री शेड का निर्माण रूकवा दिया। दमचुक क्षेत्र के बोबीर गांव लेह जिल्ला मुख्यालय से 300 किलोमीटर दूरी पर है।

---

[1] के. सुब्रमन्यम, 'चीन से सावधानी की जरूरत' 23 सितंबर टाइम्स ऑफ इंडिया
[2] ....'चीन से उत्पन्न संकट' तहलका रिपोर्ट, 1 नवंबर 2010
[3] नेहा कुमार, 'चीन से आण्विक बमों का खतरा, 'इंडिया क्वाटरली, 65, (2009) 37–53
[4] नग्वांग ग्यारत सेन, 'ग्रीन तिब्बत' रिपोर्ट, सेंट्रल तिब्बतन प्रषासन, 1996
[5] गागचेन क्वीसोग, 'तिब्बत को शांति क्षेत्र बनाने की पहल' सेंट्रल तिब्बतन प्रषासन, 1998
[6] स्वर्ण सिंह, 'चीन और दक्षिण कोरिया', लासर बुक –2003, पेज–83–93
[7] अटल बिहारी बाजपेयी, 'चार दषक संसद में' वॉल्यूम – तीन सिप्रा – 998
[8] जॉन अर्कले, 'चीन के आण्विक बम तिब्बत' रिपोर्ट, 1993
[9] ब्रहम चिलानी, 'चीन से खतरा' हिंदुस्तान टाइम्स, 15 अक्टूबर 2010
[10] जेन्स डिफेंस विकली रिपोर्ट 'चीन की सैन्य शक्ति' मई 2010
[11] गुरमीत कनवल, 'चीन की महाषक्ति बनना', स्ट्रैटिजिक एनालिसिस, वॉल्यूम 22, 1999
[12] मारूफ रजा, 'चीन से दो–दो हाथ' 28 अक्टूबर 2010
[13] छाना नोरबू, 'भारत और चीन के बीच तिब्बत' 18 सितंबर, 1999
[14] श्रीपरना पाठक, 'चीन, पाकिस्तान और भारत' आसाम ट्रिब्यून, सितंबर 2010
[15] बी रमन. 'चीन की शक्ति से भय', 6 अक्टूबर 2010, पायोनियर
[16] विजय क्रांति, 'किस दिषा में चीन, 23 अक्टूबर 2010, अमर उजाला
[17] दैनिक जागरण की रिपोर्ट, 'चीन के युवा शक्ति' 1 अक्टूबर 2010
[18] अवधेष कुमार, 'चीन से सबक लेने का समय, 'दैनिक भास्कर' 27 सितंबर 2010
[19] आशीष तिवारी, 'पाक और चीन का हर शहर निषाने पर' अमर उजाला, 25 अक्टूबर 2010
[20] डेक्कन हेराल्ड की रिपोर्टिंग, 'अरूणाचल में चीन की चाल' 24 अक्टूबर 2010
[21] कानेजी फाउंडेषन की रिपोर्ट चीन पर – अक्टूबर 2010
[22] भारत वर्मा, रक्षा विषेषज्ञ, "चीन से आक्रमण की आषंका" इंडियन डिफेंस रिव्यू–मई 2010
[23] मोनिका चानसोरिया, "चीन का आधिपत्य तिब्बत में" सेंटर फौर लैंड वार फेयर स्डीज, नई दिल्ली
[24] बी रमन, "तिब्बत पर चीन की निगाहें" साउथ एषियन एनालिसिस ग्रुप पेपर, 2381, 2007
[25] तिब्बत केंद्र की रिपोर्ट चीन की विस्तारवादी नीति पर 2007
[26] नेहा कुमार, "चीन से आण्विक खतरा" इंण्डिया क्वार्टरली, 65,2009

[27] मोनिका चानसोरिया, "चीन का विस्तार", "जर्नल, सेंटर फौर लैण्ड वार फेयर स्टडीज, नई दिल्ली, 2010
[28] बी रमन, "चीन की मंषा", साउथ चाइना एनालिसिस ग्रुप पेपर न. 2381, 2007
[29] रिपोर्ट, तिब्बत डेली नवंबर, 2010
[30] झिनुआ समाचार ब्यूरो की रिपोर्ट, 10 दिसंबर, 2008
[31] बी.बी.सी. की रिपोर्ट, 15 अक्टूबर, 2007
[32] जेनरल एस. के. सिन्हा "चीन को रोकने की जरूरत", एषियन एज, 24 नवंबर, 2010
[33] अशोक देषाई, "एक खतरनाक महाषक्ति", द टेलिग्राफ, 14 दिसंबर, 2010
[34] राहुल सिंह, "चीन की सैन्य शक्ति को रोकना होगा" "टाइम्स ऑफ इंडिया, 29 नवंबर, 2010
[35] सुधीन्द्र कुलकर्णी, "चीन से खतरा" इण्डियन एक्सप्रेस, 12 दिसंबर, 2010
[36] राजीव कुमार, "व्यापार का झांसा" इण्डियन एक्सप्रेस, 16 दिसंबर, 2010
[37] लेखक के साथ साक्षात्कार